अपसंस्कृति विरोधी सम्मेलन और प्रदर्शन

23 मार्च 1994 को भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के शहीदी दिवस पर भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा और सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में नयी दिल्ली के जन्तर-मन्तर पार्क में एक सभा का आयोजन कर दूरदर्शन से प्रसारित अपसंस्कृति, देश पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कसते शिकंजे तथा डंकल प्रस्ताव का विरोध किया गया। स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश, प्रो. श्योताज सिंह, जगवीर सिंह, विरजानन्द आदि वक्ताओं ने इस सभा को सम्बोधित किया। सभा के बाद विशाल प्रदर्शन किया गया व ज्ञापन सौंपा गया।

वक्ताओं ने एक स्वर से कहा कि पाश्चात्य अपसंस्कृति के निरतर आक्रमण से भारत की गौरवमयी संस्कृति खतरे में पड़ती जा रही है। सिनेमा और दूरदर्शन इस सांस्कृतिक प्रदूषण को फैलाने में अग्रसर है। दूरदर्शन तो सीधे घरों में आक्रमण कर रहा है। भद्दे, अश्लील फूहड़ और घटिया कार्यक्रम देकर तथा पौराणिक सीरियल प्रसारित करके टी.वी. जहाँ परम्परागत जीवन मूल्यों को धराशायी कर रहा है वहाँ पाखण्ड और अंधविश्वास फैलाने में भी सहायक हो रहा है।

वक्ताओं ने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के भारत आगमन व उनके द्वारा भारत के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करने पर रोष प्रकट किया। देश की दौलत यदि विदेश में जाने लगेगी तो फिर आर्थिक आजादी का स्वप्न कब व कैसे पूरा होगा। डंकल प्रस्ताव का अर्थ है देश को यूरोप व अमेरीका के यहाँ गिरवी रखना अतः किसी भी सूरत में ये प्रस्ताव स्वीकार्य नहीं हैं।

वक्ताओं ने पूछा कि यदि देश आर्थिक और सांस्कृतिक पतन की इस खंदक में ही गिरता रहा तो शहीदे आजम भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव के बलिदान का क्या होगा, उनके अरमानों का क्या होगा, उनके मिशन का क्या होगा?